Q. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक विकास

→ ~~भाषा वैज्ञानिक लोकनि व्याकरण, ध्वनि शब्द कोशीय आधार पर~~

अपभ्रंश भाषा जखन साहित्यिक रूप मे आबि गेल तँ जनभाषा स्वतंत्र रूप सँ विकसित होमय लागल आ इएह जनभाषा आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक कहल गेल। एकर विकास लगभग 1000 ई० सँ मानल गेल अछि। एकरा नव भारतीय आर्यभाषा क सेहो कहल जाइत अछि।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक प्रारंभिक काल बड़ परिवर्तनकारी रहल। भारतीय संस्कृतिक लेल ई नव विषय छल। भारतीय के अपन प्राचीनता सँ सदिखन मोह रहैत अछि। एहिठामक भाषा संस्कृत छल तेँ एहि भाषा सँ समक मोह नहि छूटि पबैत छल। मुदा विदेशी आक्रमण सँ बि आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक विकास तेजी सँ भेल। विदेशी आक्रमण जखन एहिठाम भेल तखन विद्वान लोकनि जनता मे उत्साह बढ़यबाक लेल प्रचार करबाक लेल सरल भाषा जनभाषाक प्रयोग कयलनि। आ ओहि समय सँ ई भाषा पूर्ण रूप मे प्रयोग मे आबि गेल। मुदा एहि पर पूर्ण सँ मुसलमानी प्रभाव नहि पड़ि जाय तेँ एहि भाषा मे संस्कृत शब्दावलीक प्रयोग कयल गेल अछि। आधुनिक आर्यभाषा आ अवहट्ट दूनू एक दोसरा सँ सकल एकाएक पूर्ण रूप मे पृथक नहि भए सकलाह। दूनू भाषाक ई मिलल जुलल रूप लगभग ५०० वर्ष धरि चलैत रहल। अपभ्रंशक रचना हमरा लोकनि के पन्द्रहवी सदी तक भेटैत रहल। अवहट्ट भाषाक रचना 'कीर्तिलता' एहि समयक रचना अछि मुदा एहि मे मैथिलीक पर्याप्त पुट अछि। एहि समयक बाद सँ आधुनिक आर्यभाषाक पूर्ण रूप सँ स्पष्ट होमय लागल आ अपभ्रंश सँ पृथक भए एहि भाषा मे पूर्ण स्वतंत्रताक अस्तित्व देखाबय लागल।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा मे अनेक प्रकार-क ध्वनि परिवर्तन भेल। एकर किछु महत्वपूर्ण विधि निम्नलिखित रूपें देखल जा सकैत अछि।

(i) एहि मे संयुक्त व्यंजनक ~~ध्वनि जेना कक~~, आ आदिक स्थान पर एकहि ध्वनिक प्रयोग होइत अछि जेना - प्राकृतक क्क, क्ख, ग्गक स्थान पर क, ख, ग भए जाइत अछि।

(ii) पूर्ववर्ती ह्रस्व स्वर दीर्घ भए जाइत अछि
जेना - सप्त - सात
अष्ट - आठ आदि

(iii) अनुनासिक व्यंजनक पश्चात पश्चात कोनो अन्य व्यंजन अयला पर अनुनासिक व्यंजन लुप्त भए पूर्ववर्ती स्वर अनुनासिक भए जाइत अछि।
जेना - दन्त - दाँत
चन्द - चाँद आदि

(iv) दू स्वरक बीच मे आवयवला ड, ढ अधिकतर ड़, ढ़ मे परिवर्तित भए जाइत अछि।
जेना - दण्ड - डांढ़

(v) शब्दक अंत मे या बीच मे इ, ई क बाद अ रहला पर दूनू मिली ई भए जाइत अछि।
जेना - घिअ - घी

आधुनिक भारतीय भाषा मे संस्कृत पाली आदिक तुलना मे शब्दक रूप कम भए जाइत अछि जाहि सँ ई भाषा सरल भए जाइत अछि। संस्कृत मे कारकक तीनो वचन मे शब्दक चौबीस रूप होइत अछि, प्राकृत मे 12 आ आधुनिक भाषा मे एकर मात्र दू रूप होइत अछि। (i) मूल रूप आ (ii) विकृत रूप। एहि मे शब्द मे क्रियाक रूप मे पर्याप्त कमी आबि गेल। एहि मे भाव आ काल व्यक्त कए देल जाइत अछि मुदा सभक रूप अलग-अलग नहि होइत अछि। रचनाक दृष्टि सँ संस्कृत, पाली, प्राकृतक भाषा योगात्मक छल मुदा आधुनिक आर्यभाषा मे ई वियोगात्मक भए

Scanned with CamScanner

गेल अछि।

भारतीय आर्यभाषाक वर्गीकरण विभिन्न विद्वान अपन - अपन रूप मे करने छथि। हार्नले 'Comparative Grammer of the languages' मे एहि भाषा कें चार वर्ग मे विभाजित करने छथि—

(क) पूर्वी गौडियन — पूर्वी हिन्दी, बंगला, असमी, उड़िया।
(ख) पश्चिमी गौडियन — पश्चिमी हिन्दी, गुजराती, सिंधी, पंजाबी
(ग) उत्तरी गौडियन — गढ़वाली, नेपाली, पहाड़ी
(घ) दक्षिणी गौडियन — मराठी

ग्रियर्सन महोदय एकरा तीन वर्ग मे विभाजित कयलनि

(i) बाहरी उपशाखा —
(क) पश्चिमोत्तरी समुदाय — लहँदा, सिंधी
(ख) दक्षिणी समुदाय — मराठी
(ग) पूर्वी समुदाय — उड़िया, बंगाली, असमी, बिहारी

(ii) मध्यमवर्ती उपशाखा :— पूर्वी हिन्दी

(iii) भीतरी उपशाखा :—
केन्द्रिय समुदाय — पश्चिमी, हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, पहाड़ी

एहि सब वर्ग कें सम्मिलित रूप मे कए एकर किछु भाषाक परिचय निम्न रूपें देल जा सकैत अछि।

(i) सिन्धी :— एहि भाषाक उत्पत्ति ब्राचड़ अपभ्रंश सँ भेल। ~~स्वतंत्रता सँ पूर्व ई भाषा भारतक सिन्ध प्रान्तक भाषा छल। पाकिस्तान विभाजनक~~ ई भाषा पाकिस्तानक सिन्ध प्रान्त मे तथा भारतक कच्छ, अजमेर, बम्बई, आ दिल्ली मे बाजल जाइत अछि। बिचौली, सिरैकी, लाड़ी, थरेली, लासी एकर पाँच प्रमुख बोली अछि। एहि सब मे बिचौली प्रमुख अछि जे अधिकामक साहित्यिक भाषा थिक। सिंधीक अपन लिपि 'लंडा' अछि।

(ii) लहँदा :— पैशाची या कैकेय अपभ्रंश सँ एकर उत्पत्ति भेल अछि। लहँदाक शाब्दिक अर्थ 'पश्चिमी' होइत अछि तें एकरा पश्चिमी भाषा सेहो कहल जाइत अछि।

Scanned with CamScanner

ई भाषा पश्चिमी पंजाब मे बाजल जाइत अछि। एकर अपन लिपि 'लंडा' अछि। एकर 4 बोली अहदा, मुल्तानी पोठवारी ~~थैक~~ आओर धन्नी अछि।

(iii) पंजाबी :- ~~एकर~~ एहू भाषाक उत्पत्ति पैशाची था कैकेय सँ भेल अछि मुदा एहि पर शौरसेनीक प्रभाव पड़ल अछि। किन्तु विद्वान एकर उत्पत्ति 'टक्क' अपभ्रंश सँ मानने छथि। ई प्राचीन मध्य पंजाब मे बाजल जाइत अछि। एकर ~~पुरानी~~ लिपि ~~छैहो~~ लंडा अछि मुदा आब एकर परिस्कृत रूप गुरुमुखी अछि। एहि भाषाक प्राचीन साहित्य बड़ कम ~~अछि~~ छैक अछि। एकर प्रमुख बोली डोग्री अछि। ~~ई भाषा~~ ई भाषा अपनो धरि प्राकृत सँ बहुत सम्बद्ध

(iv) गुजराती :- एकर क्षेत्र गुजरात, कठियावाड़ आ कच्छ अछि। एकर उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश सँ भेल अछि। गुजराती आ राजस्थानी दुनू रूप लगभग मिलल रहैत अछि। एहि भाषा मे 'ज्ञ' क उच्चारण 'ग्न' होइत अछि। जेना- ज्ञान — ग्नान।

(v) मराठी :- एहि भाषाक विकास ~~प्राकृत~~ महाराष्ट्री अपभ्रंश सँ भेल अछि। एकर क्षेत्र संपूर्ण महाराष्ट्र राज्य अछि। एकर लिपि नागरी अछि। कोंकणी, ~~बरबरी~~ बरवरी एकर प्रमुख बोली अछि।

(vi) उड़िया :- ई उड़ीसा प्रान्तक भाषा अछि। एहि मे तेलुगु आ मराठी भाषाक पर्याप्त मिश्रण अछि। एकर बोली भत्री अछि। एहि भाषाक साहित्य बड़ सम्पन्न अछि।

(vii) असमी :- मागधीक पूर्वोत्तरी रूप मे विकसित ई असम प्रान्तक भाषा थिक। एकर लिपि बंगला सँ मिलैत अछि। ~~किन्तु~~ ~~एहि~~ एहि मे देवनागरी लिपिक प्रयोग सेहो होइत अछि। असमी मे 'च', 'छ' क स्थान पर 'स' आ 'स' क प्रयोग 'ह' था 'ख' भए जाइत अछि।

(viii) बंगला :- एकर उत्पत्ति मागधी अपभ्रंशक पूर्वी रूप सँ भेल अछि। एकर क्षेत्र बंगलादेश आ भारतदेशक बंगाल राज्य अछि। पूर्वी बंगला आ पश्चिमी बंगला एकर दू शाखा अछि। एकर अपन लिपि अछि। एहि भाषाक बाजयवालाक संख्या लगभग सवा करोड़ अछि। एहि भाषा मे 'अ' क उच्चारण 'आ', ~~होइत अछि~~।